लोक जागरण के उदघोषक कबीर

डॉक्टर पविता यादव

सहायक प्रवक्ता हिंदी विभाग

राजकीय महाविद्यालय

सतनाली, महेंद्रगढ़।

सारांश -

निर्गुण भक्ति काव्य धारा के महा कवि संत कबीर न केवल कवि है, अपितु वे तो मूल रूप में संत है, भक्त हैं। इन सभी रूपों से बढकर वे लोक जागरण के एक सच्चे उद्धोषक भी है। वे मानव जाति की मुक्ति की पहचान हैं, वे भारत की आत्मा का दर्पण है। हम सब ईश्वर की संतान है, मनुष्य मात्र समान है, जाति धर्म का कोई भेद नहीं है। एसी घोषणा करने वाले सबसे पहले कवि कबीर ही है। कबीर पूरी दृढता के साथ उदार मानवता का स्वर बुलन्द करते है उनका व्यक्तित्व ऐसा व्यक्तित्व था जिसने पूर्ण निर्भीकता के साथ अनीति, अत्याचार और आडम्बरों का विरोध कर मानव मात्र से प्रेम करने का संदेश दिया। वे जन-जन को ऐसे सूत्र में बांधना चाहते है, जहां जाति-वर्ण, और वर्ग सम्बन्धी भेद ना हो। भक्ति का द्वार सबके के लिए खुला हो। ऐसा करने के लिए वे बहुत कड़ा रुख अपनाते है। उनका रूप चाहे कठोर हो या कोमल। वे तत्कालिन समाज का सुधार करते नजर आते है। सच है- कबीर लोक जागरण के एक महान् उद्धोषक है।

मुख्य शब्द: कबीर का लोक जागरण

कबीर का जन्म ऐसे समय में हुआ जब समाज अनेक बुराईयों से ग्रस्त था। छुआछूत, अन्धविश्वास, रूढिवादिता का बोलबाला था और हिन्दू-मूसलमान आपस में दंगा-फसाद करते थे। धार्मिक पाखंड अपनी धर्म सीमा पर था और धर्म के ठेकेदार अपने स्वार्थ की रोटियों, धार्मिक कट्टरता एंव उन्माद के चूल्हे पर सेक रहे थे। कबीर ने इसका डटकर विरोध किया और सभी क्षेत्रों में फैली हुई सामाजिक बुराईयों को दूर करने का भरसक प्रयास किया। उन्होने हिन्दू-मुसलमान दोनों के पाखंडों का खंडन किया तथा उन्हे सच्चे मानव धर्म को अपनाने के लिए प्रेरित किया। ये मानवता वादी आस्था के साथ समाज में सुधार लाना चाहते थे।

कबीर अपने समय की सम्पूर्ण गतिविधियों पर नजर रखते थे। तत्कालीन समाज की दशा सोचनीय थी। हिन्दू-मुस्लिम दोनों सम्प्रदायों के लोग आडम्बर युक्त आचरण कर रहे थे। कबीर इन आडम्बरों का डटकर विरोध करते हुए लोगो को इन आडम्बरों के प्रति जागरूक करते है। तीर्थाटन का विरोध करने वाले कबीर मनुष्य के शरीर को ही ईश्वर का वास स्थल कहकर स्वयं में ही ईश्वर पहचानने के लिए लोगो को उपदेश देते हुए कहते है कि :-

"मन मथुरा दिल द्वारिका, काया काशी जाण

दसवाँ द्वार देहरा, तां मैं ज्योति पिछाण ॥

समाज के प्रति जागरूक कवि ने साधना के क्षेत्र में व्याप्त बाह्य आडम्बरों का डटकर विरोध किया। लोग बाह्य आचारों को ही धर्म समझकर आन्तरिक शुद्धता पर बल नहीं देते यह बात कबीर को पता थी। इसलिए उन्होने जनता को सचेत करते हुए कहा कि जटा होना, केशलुंचन, मौनव्रत सिर मुण्डन, तिलक मुद्रा, हज यात्रा से कोई साधक नहीं हो जाता। लोग तन का योग साध रहे है, जबकि उन्हें मन का योग साधना चाहिए।

कबीर के समय ब्राहम्ण वर्ग जाति अभिमान से ग्रस्त था। अपने को ऊँचा एंव शुद्धों को नीचा मानकर उन्होंने समाज में जो छुआछूत की प्रथा चला रखी थी। उसका कबीर ने तीव्र विरोध किया। उन्होने समाज के लोगो को जागृत करते हुए कहा कि ऊँचे कुल में जन्म के मात्र से कोई ऊंचा नहीं हो जाता। ऊँचा वह है जिसकी करनी अच्छी हो स्वर्ण कलश यदि मदिरा से भर दे तो उसकी निन्दा ही होगी। यथा-

ऊंचे कुल की जननिया करनी ऊंच न होय।

सुबरन कलस सुरा भरा साधू निन्दत सोय।।

कबीर समाज के लोगो को जागरूक करते हुए कहते है कि जब हमारे शरीर की नसों में एक जैसा रक्त प्रवाहित हो रहा है, तो कोई ब्राहम्ण और कोई शूद्र नहीं है। हम सब एक ही पिता की संतान है इसलिए इस समाज में कोई ऊंचा और कोई नीचा नहीं है।

कबीर ने समाज में फैली हिंसा का विरोध हर स्तर पर किया। चाहे यह जीन के स्वाद के लिए की गई हो, या धर्म नाम पर की जा रही हो। मुसलमान दिन में रोजा रखते है और रात को गाय की कुर्बानी देते है। ये दोनों ही विरोधी कार्य है, इससे भला ख़ुदा प्रसन्न कैसे हो सकता है। वे लोगों को जागरूक करते हुए कहते है कि हिंसा का परिणाम भी बुरा होता है। बकरी तो केवल पत्तियां खाती है. इस पाप के कारण उसकी खाल खींची जाती है, किन्तु जो मनुष्य बकरी को खाते है उनका क्या हाल होगा ?

'बकरी पाती खात है ताकी काढी खाल।

जे नर बकरी खात है तिनको कौन हवाल।´

लोक जागरण की दृष्टि से कबीर ने कुसंगति, कपट और द्वेष की निन्दा की है। इन चीजों को अध्यात्म और व्यावहारिक दोनों प्रकार के जीवन में उन्नति में बाधक बताया है। कदम त्यागने की बात कबीर ने समाज के लोगों से कही है। कबीर ने सदाचारण पर भी बल दिया है। लोगों को जागरूक करते हुए उनका मत है कि हमें अच्छी बातों को ग्रहण करना चाहिए तथा बुरी बातों का त्याग करना चाहिएं हमारे जीवन का यही लक्ष्य रहे तो ठीक है -

"साधू ऐसा होना चाहिए जैसे सूप सुभाय।

सार-सार को गहि रहे थोथा देई उडाय।।ंंं

कबीरदास जी ने लोगों को जागरूक करके सम्पूर्ण समाज को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया। वे समाज में प्रचलित प्रत्येक प्रकार की असमानता, बाह्याडम्बर और योग को समाप्त कर देना चाहते थे। यह काम स्पष्टवक्ता, दृढ-विवेकी और निर्भीक व्यक्ति ही कर सकता है। निश्चय ही कबीर का व्यक्तित्व लोक जागरण के उद्घोषक के रूप में उभरकर हमारे

सामने आया है। वर्तमान युग के तथा कथित समाज सुधारक भी ऐसा साहस नहीं दिखा सकते जो कबीर ने धार्मिक उन्माद से ग्रस्त तत्कालीन युग में दिखाया था। ऐसा करके उन्होने अपने गम्भीर दायित्व का निर्वहन किया है।

संन्दर्भ ग्रंथ सूचि-

1.कबीर ग्रंथावली- डॉ. भगवत स्वरूप मिश्र

2.प्रतियोगिता साहित्य -डॉ. अशोक तिवाडी

3. कबीर ग्रंथावली- डॉ. श्यामसुंदर दास